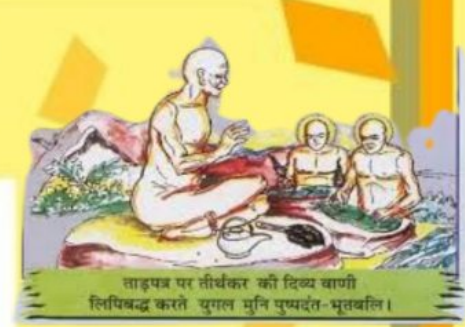


भारतवर्ष गौरवर्धनं तीर्थ स्थान
"शैलान्ध्र धाम"
शैलान्ध्र गैरवर्धनं शैलान्ध्र धाम

श्री षट्खण्डागम पूजन

स्थापना (दोहा)

वीर प्रभु गौतम गुरु को कर जोरि प्रणाम ।
द्वादशांग श्रुत प्रकट हो वर्ते ऐसा ज्ञान ॥
भाव सहित पूजा करूँ, षट्खण्डागम सार।
भेद-प्रभेदों में लखूँ, प्रभो ! समय का सार ॥



भारतवर्षं गौरवयंतु तीर्थ स्थान
"शैलधाम"
शैलधाम शैलधाम शैलधाम शैलधाम

श्री षट्खण्डागम पूजन

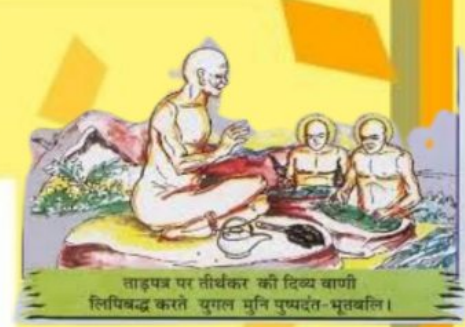
स्थापना (दोहा)

धन्य दिवस श्रुत पंचमी हुआ सुश्रुत अवतार ।
सम्यक् श्रुत आराधना कर होऊँ भव-पार ॥

ॐ ह्रीं श्री षट्खण्डागमस्वरूप-प्रथम-श्रुतस्कन्ध ! अत्र अवतर अवतर
संवौषट् । (इति आह्वानम्)

ॐ ह्रीं श्री षट्खण्डागमस्वरूप प्रथम श्रुतस्कन्ध ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
(इति स्थापनम्)

ॐ ह्रीं श्री षट्खण्डागमस्वरूप प्रथम श्रुतस्कन्ध ! अत्र मम सन्निहितो
भव भव वषट् । (इति सन्निधिकरणम्)

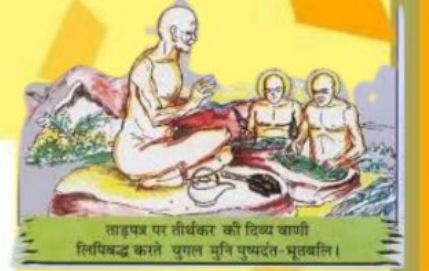


ताडपत्र पर तीर्थंकर की दिव्य वाणी
लिपिबद्ध करते युगल मुनि पुण्यदंत-भूतबलि ।



"शैलव्य धाम"
भारतं गौरवतु दीर्घं स्थान
शैलव्यं शैलव्यं शैलव्यं शैलव्यं धाम

श्री षट्खण्डागम पूजन (हरिगीतिका)



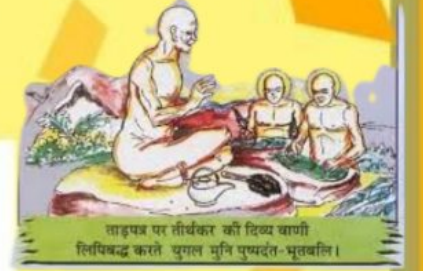
सिद्धान्त ज्ञान सुनीर निर्मल, मोह-मल क्षालित करे।
जिन-चरण में अर्पित करें, भवि जीव भव-सागर तरें ॥
षट्खण्ड आगम ग्रन्थ पढ़, चेतन-अखण्ड स्वपद लखूँ।
धरसेन गुरुवर पुष्पदन्त-रु भूतबलि पद युग नमूँ॥



ॐ ह्रीं श्री प्रथम श्रुतस्कन्ध-स्वरूप-षट्खण्डागमग्रन्थाय
जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

"शैलश्री धाम"
शैलश्री धाम

श्री षट्खण्डागम पूजन (हरिगीतिका)



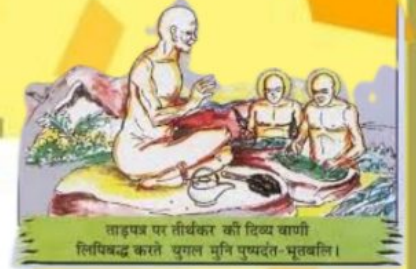
सिद्धान्त ज्ञान-सुगन्ध मलयज प्रभु चरण अर्पित करूँ।
शुद्धात्म आश्रित ज्ञान पाकर भवातप सब क्षय करूँ॥
षट्खण्ड आगम ग्रन्थ पढ़, चेतन अखण्ड स्वपद लखूँ।
धरसेन गुरुवर पुष्पदन्त-रु भूतबलि पद युग नमूँ॥

ॐ ह्रीं श्री प्रथम श्रुतस्कन्ध-स्वरूप षट्खण्डागमग्रन्थाय
संसारताप-विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।



"शैलान्य धाम"
भारतं गौरवतु तीर्थस्थान
शैलानि चेतनानि चेतनानि शम्भवान् धाम

श्री षट्खण्डागम पूजन (हरिगीतिका)



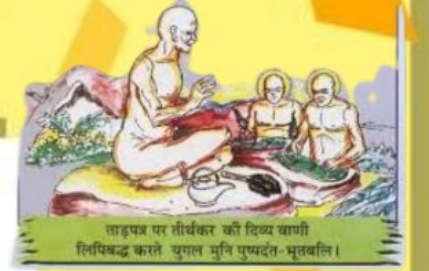
सिद्धान्त सूत्र अखण्ड मिथ्या-वादि मद खण्डित करें।
प्रभु चरण में श्रद्धा समर्पित कर अखण्डित पद लहें ॥
षट्खण्ड आगम ग्रन्थ पढ़, चेतन-अखण्ड स्वपद लखूँ।
धरसेन गुरुवर पुष्पदन्त-रु भूतबलि पद युग नमूँ॥



ॐ ह्रीं श्री प्रथम श्रुतस्कन्ध-स्वरूप षट्खण्डागमग्रन्थाय
अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

"शैलव्य धाम"
भारतं गौरवतु तीर्थ स्थान
शैलव्यं शैलव्यं शैलव्यं शैलव्यं धाम

श्री षट्खण्डागम पूजन (हरिगीतिका)



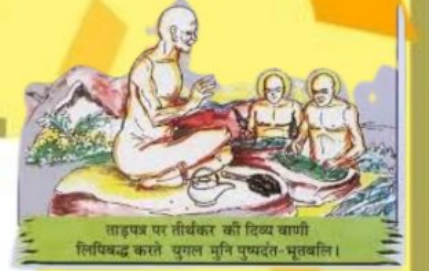
सिद्धान्त सुरभित सुमन भविजन-भ्रमर चित्त रमावते ।
निष्काम श्रुत आराधना कर काम भाव विनाशते ॥
षट्खण्ड आगम ग्रन्थ पढ़, चेतन-अखण्ड स्वपद लखूँ।
धरसेन गुरुवर पुष्पदन्त-रु भूतबलि पद युग नमूँ॥



ॐ ह्रीं श्री प्रथम श्रुतस्कन्ध-स्वरूप षट्खण्डागमग्रन्थाय
कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

"शैलव्य धाम"
भारतं गौरवतु तीर्थ स्थान
शैलव्यं शैलव्यं शैलव्यं शैलव्यं धाम

श्री षट्खण्डागम पूजन (हरिगीतिका)

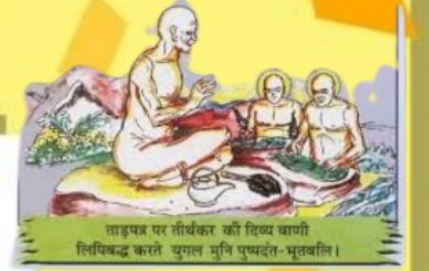


सिद्धान्त रस के रसिकजन को क्षुधा नहीं पीड़ित करे।
प्रभु भक्ति रस आस्वाद कर भवरोग शीघ्र शमित करे॥
षट्खण्ड आगम ग्रन्थ पढ़, चेतन-अखण्ड स्वपद लखूँ।
धरसेन गुरुवर पुष्पदन्त-रु भूतबलि पद युग नमूँ॥



ॐ ह्रीं श्री प्रथम श्रुतस्कन्ध-स्वरूप-षट्खण्डागमग्रन्थाय
क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री षट्खण्डागम पूजन (हरिगीतिका)



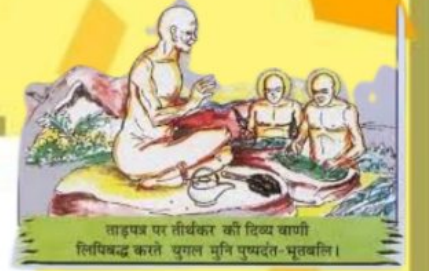
सिद्धान्त दीप प्रकाश में भवि स्व-पर भेद पिछानते ।
प्रभु पद-कमल पूजा करें निज चित्-स्वरूप निहारते ॥
षट्खण्ड आगम ग्रन्थ पढ़, चेतन-अखण्ड स्वपद लखूँ ।
धरसेन गुरुवर पुष्पदन्त-रु भूतबलि पद युग नमूँ ॥



ॐ ह्रीं श्री प्रथम श्रुतस्कन्ध-स्वरूप-षट्खण्डागमग्रन्थाय
मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

"शैलव्य धाम"
भारतं गौरवतु तीर्थस्थान
शैलव्यं शैलव्यं शैलव्यं शैलव्यं धाम

श्री षट्खण्डागम पूजन (हरिगीतिका)

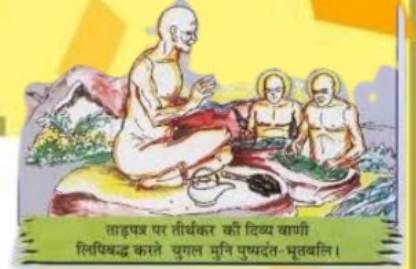


सिद्धान्त ज्ञान-सुधूप ले ध्यानाग्नि प्रजलित भवि करें ।
निष्काम जिनवर-अर्चना कर कर्म-मल सब क्षय करें ॥
षट्खण्ड आगम ग्रन्थ पढ़, चेतन-अखण्ड स्वपद लखूँ ।
धरसेन गुरुवर पुष्पदन्त-रु भूतबलि पद युग नमूँ ॥



ॐ ह्रीं श्री प्रथम श्रुतस्कन्ध-स्वरूप षट्खण्डागमग्रन्थाय
अष्टकर्मदहनाय धूप निर्वपामीति स्वाहा ।

श्री षट्खण्डागम पूजन (हरिगीतिका)



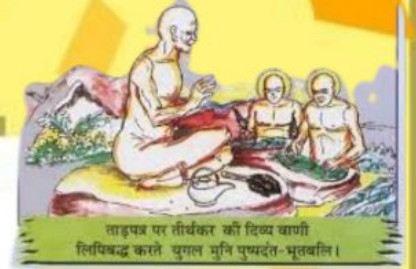
सिद्धान्त बोध सुवृक्ष पर कैवल्य फल निश्चित फलें।
प्रभु! भक्ति निर्वाछक फले भवि सहज चिन्मय सुख लहें।।
षट्खण्ड आगम ग्रन्थ पढ़, चेतन-अखण्ड स्वपद लखूँ।
धरसेन गुरुवर पुष्पदन्त-रु भूतबलि पद युग नमूँ।।



ॐ ह्रीं श्री प्रथम श्रुतस्कन्ध-स्वरूप षट्खण्डागमग्रन्थाय
मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

"शैलव्य धाम"
भारतं गौरवतु तीर्थस्थान
शैलव्यं शैलव्यं शैलव्यं शैलव्यं धाम

श्री षट्खण्डागम पूजन (हरिगीतिका)



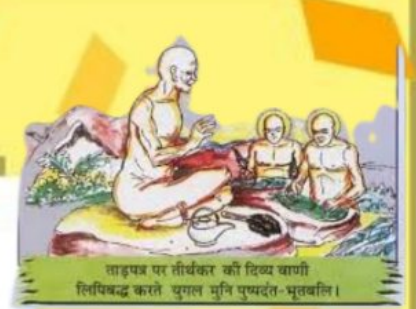
सिद्धान्त वैभव द्रव्यश्रुत यह जगत में अनमोल है।
प्रभु ! भावश्रुत में भासता निज पद अनर्घ्य अमोल है॥
षट्खण्ड आगम ग्रन्थ पढ़, चेतन-अखण्ड स्वपद लखूँ।
धरसेन गुरुवर पुष्पदन्त-रु भूतबलि पद युग नमूँ॥

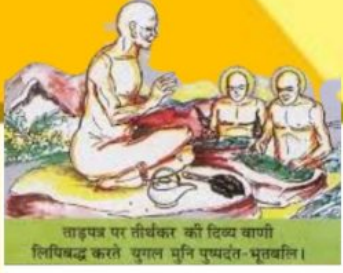


ॐ ह्रीं श्री प्रथम श्रुतस्कन्ध-स्वरूप षट्खण्डागमग्रन्थाय
अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री षट्खण्डागम पूजन अर्घ्यावलि (दोहा)

गुरु धरसेनाचार्य के चरणों का धरि ध्यान।
पुष्पदन्त अरु भूतबलि को नित करूँ प्रणाम॥
षट्खण्डागम शास्त्र की महिमा चित् में लाय।
द्वादशांग श्रुतज्ञान को पूजूँ अर्घ्य बनाय॥
भक्तिपूर्वक मैं करूँ वर्णन अति संक्षेप।
द्वादशांग श्रुतज्ञान हो मम उर में निक्षेप ॥
(इति पुष्पांजलिं क्षिपामि / क्षिपेत्)





श्री षट्खण्डागम पूजन

भारतवर्ष गौरवस्तु तीर्थ स्थान
"शैलधाम"
शैलधाम गौरीवर्ष गौरवस्तु तीर्थ स्थान

1. प्रथम खण्ड 'जीवट्टाण' समन्वित द्वादशांग के लिए अर्घ्य (छन्द-दोहा)

श्रुतभक्ति का अर्घ्य ले, शोधूँ श्रुत का सार ।
जिसके हैं ये भेद सब, वह अभेद चित् धार ॥

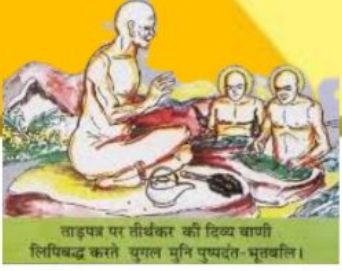
ॐ ह्रीं श्री जीवट्टाणसमन्वित द्वादशांग श्रुतज्ञानाय
अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।



श्री षट्खण्डागम पूजन

भारतजुं गौरवतु तीर्थ स्थान
"शैलान्य धाम"

शैलान्य धामने शैलान्य धाम

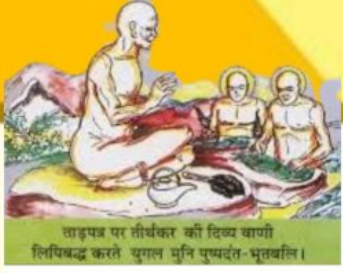


ताडपत्र पर तीर्थंकर की दिव्य वाणी
लिखिबद्ध करते युगल मुनि पृथ्वी-भूतबलि ।

2. द्वितीय खण्ड 'खुद्दाबन्ध' समन्वित द्वादशांग के लिए अर्घ्य

खण्ड दूसरा खुद्दा अथवा क्षुल्लक बन्ध कहा जाता ।
ग्यारह अधिकारों में कर्मबन्ध भेदों की महाकथा ॥
अंतर काल तथा स्वामित्व-रु भंग विचयत्रय अनुगम द्वार ।
द्रव्य क्षेत्र स्पर्शन अधिगम नाना जीव-रु भागाभाग ॥
अनुगम-अल्पबहुत्व ग्यारवाँ, जीव कर्म का बन्ध करे ।
किन्तु शुद्धनय से यह चेतन कर्मों से नहिं कभी बँधे ॥





श्री षट्खण्डागम पूजन

भारतं तु गौरवयंतु तीर्थ स्थान
"शैलान्य धाम"

शैलान्य धाम शैलान्य धाम शैलान्य धाम

2. द्वितीय खण्ड 'खुदाबन्ध' समन्वित द्वादशांग के लिए अर्घ्य

श्रुतभक्ति का अर्घ्य ले, शोधूँ श्रुत का सार ।
मैं अबद्धस्पृष्ट हूँ, पद अनर्घ्य अविकार ॥

ॐ ह्रीं श्री खुदाबन्धसमन्वित द्वादशांगश्रुतज्ञानाय
अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।



श्री षट्खण्डागम पूजन

भारतनु गौरवकु तीव्र स्थान
"शैलान्य धाम"
शैलान्य धामने शैलान्यु रामानु धाम



3. तृतीय खण्ड 'बन्ध-स्वामित्व विचय' समन्वित द्वादशांग के लिए अर्घ्य

खण्ड तृतीय बन्ध-स्वामित्व विचय नाम बुधजन ज्ञाता।
किसे कौन-सी प्रकृति बन्ध होता है अथवा नहीं होता।
स्वोदय और परोदय बन्धरूप प्रकृति का वर्णन है।
कर्मबन्ध सम्बन्धी सब विषयों का इसमें वर्णन है ॥



श्री षट्खण्डागम पूजन

भारतं तु गौरवतु तीर्थ स्थल
"शैलधाम धाम"
शैलधाम शैलधाम शैलधाम शैलधाम



3. तृतीय खण्ड 'बन्ध-स्वामित्व विचय' समन्वित द्वादशांग के लिए अर्घ्य

श्रुतभक्ति का अर्घ्य ले, शोधूँ श्रुत का सार ।
मैं अबद्धस्पृष्ट हूँ, पद अनर्घ्य अविकार ॥

ॐ ह्रीं श्री बन्धस्वामित्वविचयसमन्वित द्वादशांगश्रुतज्ञानाय
अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।



श्री षट्खण्डागम पूजन

भारतनु गौरवकु तीव्र स्थान
"जैतण्य धाम"
जैतण्यी जैतण्यो जैतण्यु रामानु धाम



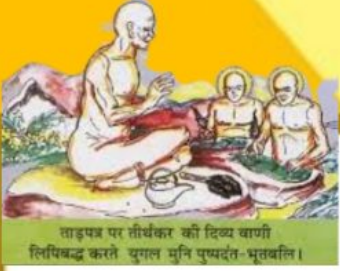
4. चतुर्थ खण्ड 'वेदना' समन्वित द्वादशांग के लिए अर्घ्य

चौथा खण्ड वेदना इसमें कृति एवं वेदना कथन।
पाँच शरीरों की संघातन परिशातन कृति का वर्णन ॥
नाम थापना द्रव्य ग्रन्थ गणना कारण अरु भाव कहे।
सात भेद से कृति का वर्णन किन्तु मुख्य गणना ही है॥
सोलह अधिकारों में वर्णन करें वेदना का आचार्य।
नय निक्षेप नाम अरु द्रव्य क्षेत्र काल प्रत्यय अरु भाव॥



श्री षट्खण्डागम पूजन

भारतं गौरवतु तीर्थ स्थल
"जैतण्य धाम"
जैतण्यी जैनानां जैतण्यं रामानुज धाम



4. चतुर्थ खण्ड 'वेदना' समन्वित द्वादशांग के लिए अर्घ्य

गति स्वामित्व वेदना और अनन्तर सन्निकर्ष परिमाण
भागाभाग-रु अल्पबहुत्व सहस्र सोलह पद रचे सुजान॥

श्रुतभक्ति का अर्घ्य ले, शोधूँ श्रुत का सार ।
अहो! अवेदक मैं सदा, पद अनर्घ्य अविकार॥

ॐ ह्रीं श्री वेदनाखण्डसमन्वित - द्वादशांगश्रुतज्ञानाय
अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।



श्री षट्खण्डागम पूजन

भारतनु गौरवकु तीव्र स्थान
"जैतण्य धाम"

जैतण्यी जैतण्यो जैतण्यु रामानु धाम



साङ्गपर तीर्थंकर को दिव्य वाणी
लिपिबद्ध करते दुर्गल मुनि पुष्पदंत-भूतबलि।

5. पंचम खण्ड 'वर्गणा' समन्वित द्वादशांग के लिए अर्घ्य

खण्ड पाँचवाँ नाम वर्गणा बंधनीय अधिकार प्रधान ।
तेइस एवं कर्मबन्ध के योग्य वर्गणा कहीं सुजान ॥
और साथ में सोलह अधिकारों में तेरह स्पर्श बखान ।
दश प्रकार कर्मों का वर्णन करते ये अधिकार-महान ॥
नाम थापना द्रव्य भाव से शील-स्वभाव-प्रकृति वर्णन ।
सोलह अधिकारों में करते वीरसेन आचार्य महान ॥



श्री षट्खण्डागम पूजन

भारतं गौरवतु तीर्थ स्थल
"जैतण्य धाम"
जैतण्यी जैनानां जैतण्यं रामानुज धाम



5. पंचम खण्ड 'वर्गणा' समन्वित द्वादशांग के लिए अर्घ्य

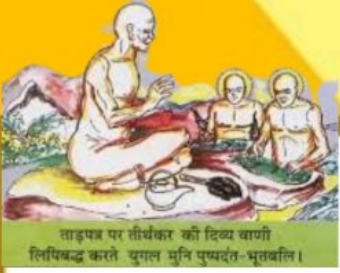
श्रुतभक्ति का अर्घ्य ले, शोधूँ श्रुत का सार ।
मैं चिन्मय निष्कर्म हूँ, पद अनर्घ्य अविकार ॥

ॐ ह्रीं श्री वर्गणाखण्डसमन्वित द्वादशांग श्रुतज्ञानाय
अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।



श्री षट्खण्डागम पूजन

भारतम् गौरवतु तीर्थ स्थान
"जैतण्य धाम"
जैतण्यी जैतण्ये जैतण्यं रामानुज धाम



6. षष्ठ खण्ड 'महाबन्ध' समन्वित द्वादशांग के लिए अर्घ्य

भूतबलि भट्टारक ने ही महाबन्ध का रचा विधान।
प्रकृति थिति अनुभाग प्रदेश बंध का किया महा व्याख्यान।।
महा धवल भी कहते इसको मूल नाम सत्कर्म कहा।
अष्टादश अनुयोग द्वार से वर्णन इसमें किया गया।



श्री षट्खण्डागम पूजन

भारतम् गौरवम् तु तीर्थ स्थान
"जैतण्य धाम"
जैतण्यी जैतण्ये जैतण्यं रामानुज धाम



6. षष्ठ खण्ड 'महाबन्ध' समन्वित द्वादशांग के लिए अर्घ्य

श्रुतभक्ति का अर्घ्य ले, शोधूँ श्रुत का सार ।
मैं चेतन निर्बन्ध हूँ, पद अनर्घ्य अविकार ॥

ॐ ह्रीं श्री महाबन्धसमन्वित-द्वादशांग श्रुतज्ञानाय
अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।



श्री षट्खण्डागम पूजन

भारतं तु गौरवतु तीर्थ स्थल
"शैलधाम धाम"
शैलधाम शैलधाम शैलधाम शैलधाम



7. कसायपाहुड़ समन्वित द्वादशांग के लिए अर्घ्य

ज्ञानप्रवाद पूर्व की दसवीं वस्तु महा अधिकार महान ।
तीजा प्राभृत कसायपाहुड़ का गुणधराचार्य को ज्ञान ॥
पेज्ज-दोष पाहुड़ भी कहते राग-द्वेष वर्णन विस्तार ।
हैं चौबिस अनुयोग द्वार से कहे गए पन्द्रह अधिकार ॥
श्रुतभक्ति का अर्घ्य ले, शोधूँ श्रुत का सार ।
मैं अकषाय स्वरूप हूँ, पद अनर्घ्य अविकार ॥
ॐ ह्रीं श्री कषायपाहुडसमन्वित द्वादशांगश्रुतज्ञानाय
अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।



श्री षट्खण्डागम पूजन

भारतं गौरवतु तीर्थ स्थल
"शैलधाम"

शैलधाम शैलधाम शैलधाम शैलधाम



साङ्गपर तीर्थंकर की दिव्य वाणी
लिपिबद्ध करते युगल मुनि पुष्पदंत-भूतबलि।

8. पंच परमागम के लिए अर्घ्य (हरिगीतिका- दोहा)

कलिकाल में सर्वज्ञवत् गुरु कुन्दकुन्दाचार्य हैं।
शिवमग प्रकाशक पंच परमागम सु-रचनाकार हैं।
नव तत्त्व में गत आत्मज्योति है समय के सार में।
ज्ञान-सुख अरु ज्ञेय का वर्णन सु-प्रवचनसार में ॥
मार्ग एवं मार्ग-फल वर्णन नियम के सार में।
षट् द्रव्य और पदार्थ नौ व्याख्या पंचास्तिकाय में ॥



श्री षट्खण्डागम पूजन

भारतं तु गौरवतु तीर्थ स्थल
"जैतण्य धाम"
जैतण्यी जैतण्ये जैतण्यं तु रामानुज धाम



8. पंच परमागम के लिए अर्घ्य (हरिगीतिका-दोहा)

अष्टपाहुड़ में विविध वर्णन किया शिवमार्ग का।
ये पंच परमागम दिखाते मार्ग शिव सुख प्राप्ति का ॥
श्रुतभक्ति का अर्घ्य ले, शोधूँ श्रुत का सार ।
शिव रमणी रमनार हूँ, पद अनर्घ्य अविकार ॥
ॐ ह्रीं श्री पंचपरमागमसमन्वित द्वादशांग श्रुतज्ञानाय
अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।



श्री षट्खण्डागम पूजन

भारतं गौरवतु तीर्थ स्थल
"शैलश्रद्धा धाम"
शैलश्रद्धा धाम



9. प्रथमानुयोग के लिए अर्घ्य (हरिगीतिका-दोहा)

मन्दबुद्धि जीवों को यह प्रथमानुयोग जिनवर कहते।
पौराणिक पुरुषों के जीवन की घटना वर्णन करते ॥
पुण्य-पाप का फल बतलाकर उसे दुखद बतलाते हैं।
वीतरागता सुखदायी कह निज हित रुचि जगाते हैं॥



श्री षट्खण्डागम पूजन

भारतं तु गौरवतु तीर्थ स्थल
"चैतन्य धाम"
चैतन्यो चैतन्यो चैतन्यं तु रामानुज धाम



9. प्रथमानुयोग के लिए अर्घ्य (हरिगीतिका-दोहा)

असद्भूत व्यवहार से ही यह जानन योग्य।
भेदज्ञान की पुष्टि ही, इसमें करने योग्य ॥
श्रुतभक्ति का अर्घ्य ले, शोधूँ श्रुत का सार ।
निज चैतन्य स्वभाव ही, पद अनर्घ्य अविकार ॥
ॐ ह्रीं श्री 'जिनमुखोद्भूत-प्रथमानुयोगशास्त्रेभ्यो
अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।



श्री षट्खण्डागम पूजन

भारतं तु गौरवतु तीर्थ स्थान
"शैलधाम धाम"
शैलधाम शैलधाम शैलधाम शैलधाम



(10). करणानुयोग के लिए अर्घ्य

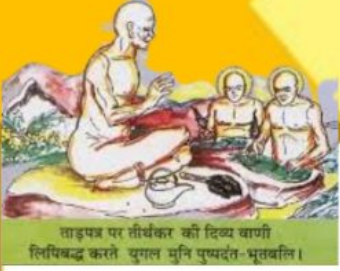
सूक्ष्मबुद्धि जीवों को यह करणानुयोग जिनवर कहते।
कर्मप्रकृतियों से बन्धन अरु उदय आदि वर्णन करते।।
पर आश्रित परिणाम जीव को दुखदायी बतलाते हैं।
तीन लोक रचना का भी श्री गुरुवर ज्ञान कराते हैं।।



श्री षट्खण्डागम पूजन

भारतं गौरवतु तीर्थ स्थल
"शैलधाम"

शैलधाम शैलधाम शैलधाम शैलधाम



साङ्गपर तीर्थंकर की दिव्य वाणी
लिपिबद्ध करते युगल मुनि पुष्पदंत-भूतबलि।

(10). करणानुयोग के लिए अर्घ्य

असद्भूत व्यवहार से ही यह जीव स्वरूप।
ज्ञान-राग की भिन्नता, मात्र प्रयोजनभूत ॥
श्रुतभक्ति का अर्घ्य ले, शोधूँ श्रुत का सार।
द्रव्य भाव नोकर्म बिन, पद अनर्घ्य अविकार ॥

ॐ ह्रीं श्री 'जिनमुखोद्भूत-करणानुयोगशास्त्रेभ्यो
अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।



श्री षट्खण्डागम पूजन

भारतं गौरवतु तीर्थ स्थल
"जैतण्य धाम"
जैतण्यी जैतण्ये जैतण्यं रामानुज धाम



(11) चरणानुयोग के लिए अर्घ्य

साधक जीवों के जीवन में होता है कैसा व्यवहार।
इसका वर्णन करते गुरुवर यह चरणानुयोग सुखकार ॥
श्रावक और श्रमण की बाह्य क्रिया इसमें गुरु बतलाते।
किन्तु मात्र उपचरित धर्म है यह रहस्य गुरु समझाते ॥



श्री षट्खण्डागम पूजन

भारतं गौरवतु तीर्थ स्थान
"शैलधाम"

शैलधाम शैलधाम शैलधाम शैलधाम



(11) चरणानुयोग के लिए अर्घ्य

जीव क्रिया करता, कहे असद्भूत व्यवहार।
करता है निज भाव का, कहता नय परमार्थ ॥
श्रुतभक्ति का अर्घ्य ले, शोधूँ श्रुत का सार ।
निष्क्रिय चिन्मय तत्त्व ही, पद अनर्घ्य अविकार ॥

ॐ ह्रीं श्रीं 'जिनमुखोद्भूत-चरणानुयोगशास्त्रेभ्यो
अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।



श्री षट्खण्डागम पूजन

भारतं गौरवतु तीर्थ स्थल
"जैतव्य धाम"
जैतव्यी जैतव्ये जैतव्यं रामानुज धाम



(12) द्रव्यानुयोग के लिए अर्घ्य

नौ पदार्थ छह द्रव्य बताता यह द्रव्यानुयोग सुखकार।
भेदज्ञान अरु वीतरागता ही शिव-पथ कहते आचार्य ॥
मलिन और निर्मल पर्यायों का भी इसमें कथन किया।
पर्यायों से भिन्न त्रिकाली ध्रुव दृष्टि में बसा लिया।



श्री षट्खण्डागम पूजन

भारतं गौरवतु तीर्थ स्थल
"चैतन्य धाम"
चैतन्यो चैतन्यो चैतन्यो रामानुज धाम



(12) द्रव्यानुयोग के लिए अर्घ्य

आत्मज्ञान ही ज्ञान है, द्वादशांग का सार।
चिन्मय ज्ञायक भाव ही, मात्र समय का सार ॥
श्रुतभक्ति का अर्घ्य ले, शोधूँ श्रुत का सार
ज्ञानमात्र निज भाव ही, पद अनर्घ्य अविकार ॥

ॐ ह्रीं श्री 'जिनमुखोद्भूत-द्रव्यानुयोगशास्त्रेभ्यो
अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।



श्री षट्खण्डागम पूजन

भारतं गौरवतु तीर्थ स्थल
"शैलधाम धाम"
शैलधाम शैलधाम शैलधाम शैलधाम धाम



पूर्णार्घ्य (जोगीरासा)

परिणामों को धवल बनाने धवलत्रयी पहचानूँ ।
इक शत बासठ सहस श्लोक हैं इसकी महिमा जानूँ ॥
सोलह खण्डों में धवला टीका षट्खण्डागम की।
श्लोक बहत्तर सहस रचे जय हो जय जिन आगम की ॥१॥



श्री षट्खण्डागम पूजन

भारतं गौरवतु तीर्थ स्थल
"शैलान्ध धाम"
शैलान्ध धाम गौरवतु तीर्थ स्थल



साङ्गपर तीर्थंकर की दिव्य वाणी
लिपिबद्ध करते युगल मुनि पुष्पदंत-भूतबलि।

पूर्णार्घ्य (जोगीरासा)

सोलह खण्डों में जयधवला है कषायपाहुड़ की।
वीरसेन जिनसेन सूरि की रचना साठ हजारी ॥
भूतबली कृत महाबन्ध ही महाधवल कहलाता।
तीस सहस श्लोक रचे जो सूक्ष्म बुद्धि पढ़ पाता ॥२॥



श्री षट्खण्डागम पूजन

भारतं गौरवतु तीर्थ स्थान
"शैलश्रद्धा धाम"
शैलश्रद्धा धाम



पूर्णार्घ्य (जोगीरासा)

उनतालिस भागों में ये सब ग्रन्थ आज हैं मिलते।
नय-व्यवहार कथन से ज्ञानी परमारथ को लखते ॥
परमारथ के ज्ञान हेतु हस्तावलम्ब व्यवहारा।
अतः बहुत कथनी इस नय की कहे जिनागम सारा ॥३॥



श्री षट्खण्डागम पूजन

भारतं गौरवतु तीर्थ स्थल
"चैतन्य धाम"

चैतन्यो चैतन्यो चैतन्यो रामानुज धाम



पूर्णार्घ्य (जोगीरासा)

परमागम के सारभूत निज ज्ञायक को पहचानूँ।
उसमें ही अपनापन करके भेदों को बस जानूँ ॥
वीतरागता की पोषक है श्री जिनवर की वाणी ।
है चारों अनुयोग कथन की शैली निज कल्याणी ॥४॥

श्रुतभक्ति का अर्घ्य ले, शोधूँ श्रुत का सार ।

मोक्ष महल में आइये, प्रिय चैतन्य कुमार।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भूत-द्वादशांग श्रुतज्ञानाय अनर्घ्यपदप्राप्तये
पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।





श्री षट्खण्डागम पूजन

भारतं गौरवतु तीर्थ स्थान
"शैलश्रद्धा धाम"

शैलश्रद्धा धाम

जयमाला (हरिगीतिका)

षट्खण्ड आगम ग्रन्थ की महिमा जगत विख्यात है।
यह प्रथम श्रुतस्कन्ध जिसमें जैनशासन व्याप्त है।
ज्यों चक्रवर्ती जीतते षट्खण्ड को पुरुषार्थ से।
त्यों जानकर षट् द्रव्य भविजन सुख लहें निज अर्थ से ॥१॥





श्री षट्खण्डागम पूजन

भारतं गौरवतु तीर्थ स्थल
"जैतण्य धाम"
जैतण्यी जैतण्ये जैतण्यं रामानुज धाम

जयमाला (हरिगीतिका)

धरसेन गुरु कुछ अंग एवं पूर्व के ज्ञाता हुए।
गिरनार गिरि पर शुद्ध आत्म के परम ध्याता हुए॥
गुरु भूतबलि अरु पुष्पदन्त महामुनि निर्ग्रन्थ थे।
सूक्ष्म प्रज्ञा के धनी वे पथिक थे शिवपंथ के ॥२॥





श्री षट्खण्डागम पूजन

भारतं गौरीयंतु तीर्थ स्थल
"शैलधाम"

शैलधाम शैलधाम शैलधाम शैलधाम

जयमाला (हरिगीतिका)

श्रुतज्ञान पा धरसेन गुरु से उभय मुनिवर धन्य थे।
षट्खण्ड आगम ग्रन्थ रचना कर निजात्म अनन्य थे।
वीरसेन महामुनि टीका रची धवला महा ।
जिसका पठन कर धवल-धी से भव्य सुख पाते अहा॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भूत- द्वादशांग श्रुतज्ञानाय
अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमालापूरार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।





श्री षट्खण्डागम पूजन

भारतं गौरवतु तीर्थ स्थल
"शैलधाम धाम"

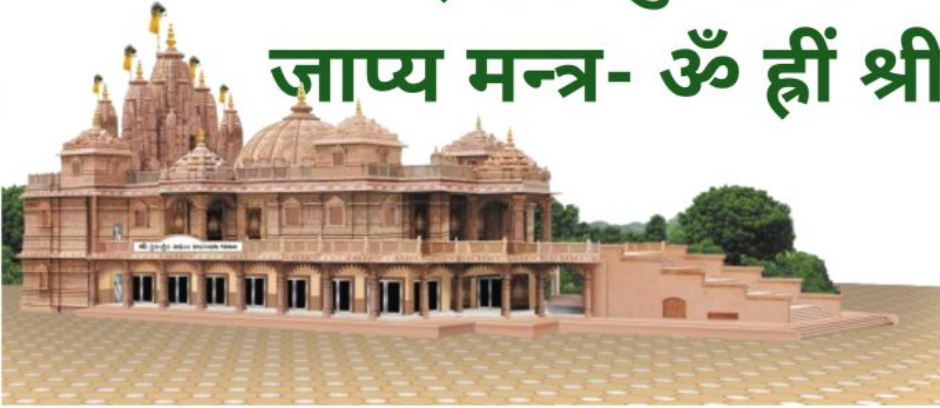
शैलधाम शैलधाम शैलधाम शैलधाम

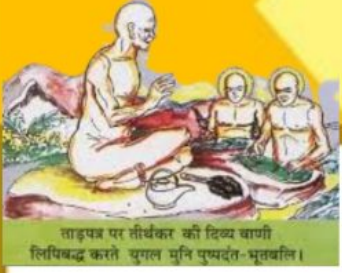
जयमाला (दोहा)

श्रुत-सेवनमय अर्घ्य यह, भविजन को सुखकार।
जिन आगम अभ्यास ही, पद अनर्घ्य दातार ॥

(इति पुष्पांजलिं क्षिपामि/क्षिपेत् ।)

जाप्य मन्त्र- ॐ ह्रीं श्रीसम्पूर्णद्वादशांगाय नमः ।





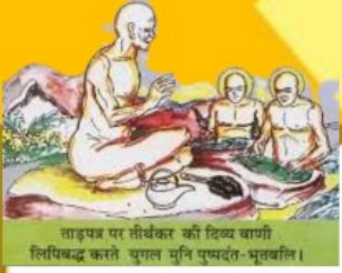
श्री धरसेनाचार्य के लिए अर्घ्य (चौपाई)

भारतवर्ष गौरवर्षं तु तीर्थ स्थान
"चैतन्य धाम"

चैतन्य धाम चैतन्य धाम चैतन्य धाम

धन्य धन्य धरसेनाचार्य करते निज चैतन्य विहार।
गिरि गिरनार शिखर विख्यात में करते सिद्धों से बात ॥
व्याख्याप्रज्ञप्ति अंग का ज्ञान दृष्टिवाद का भी कुछ ज्ञान।
रहे सुरक्षित कैसे ज्ञान चिन्ता गुरु को कृपा-निधान ॥
हुआ योग द्वय मुनि महान उन्हें पढ़ाया निज श्रुत-ज्ञान ।
गुरु-चरणों में अर्घ्य चढ़ाय पद-अनर्घ्य दृष्टि में लाय ॥
ॐ ह्रीं श्री अंगपूर्वांग-अंशधारि-धरसेनाचार्यदेवाय
अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।





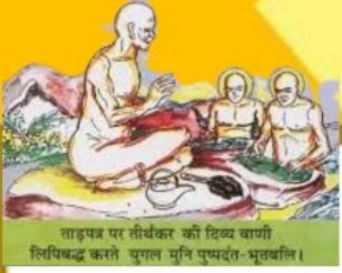
श्री पुष्पदन्त मुनिराज के लिए अर्घ्य "शैलधाम" (चौपाई)

भारतवर्ष गौरवर्ष तु तीर्थ स्थान

शैलधाम शैलधाम शैलधाम शैलधाम

पुष्पदन्त मुनिराज महान सुरगण पूजित गुरु गुणखान ।
श्री धरसेन सुगुरु सन्देश आए मुनि गिरनार प्रदेश ॥
स्वयं विवेकी प्रज्ञावन्त किया शुद्ध गुरु का इक मन्त्र ।
पाया श्रीगुरु से श्रुत-ज्ञान अनुभव में निज आत्म-ज्ञान ॥
ज्ञान किया मुनि ने लिपिबद्ध सूत्र एक सौ सत्तर बद्ध ।
गुरु-चरणों में अर्घ्य चढ़ाय पद-अनर्घ्य दृष्टि में लाय ॥
ॐ ह्रीं श्री प्रथम श्रुतस्कन्धप्रदातृ-पुष्पदन्तमुनये
अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।





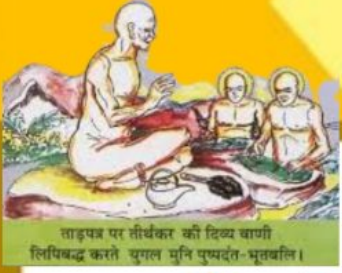
भूतबलि मुनिराज के लिए अर्घ्य (चौपाई)

भारतवर्ष गौरवर्षं तु तीर्थ स्थान
"शैलश्रद्धा धाम"

शैलश्रद्धा शैलश्रद्धा शैलश्रद्धा शैलश्रद्धा धाम

भूतबली मुनिराज महान रत्नत्रय भूषित गुण- खान ।
पुष्पदन्त संग किया विहार आए गिरि गिरनार मँझार ॥
स्वयं विवेकी प्रज्ञावन्त शुद्ध कर दिया गुरु का मंत्र ।
गुरु धरसेन समीप निवास प्राप्त किया श्रुतज्ञान विलास ॥
वह श्रुतज्ञान किया लिपिबद्ध छह हजार सूत्रों में बद्ध ।
गुरु-चरणों में अर्घ्य चढ़ाय पद-अनर्घ्य दृष्टि में लाय ॥
ॐ ह्रीं श्री प्रथम श्रुतस्कन्धप्रदातृ-भूतबलिमुनये
अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।





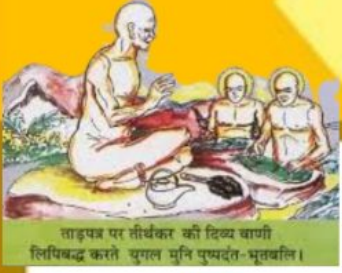
श्री वीरसेन आचार्य के लिए अर्घ्य (चौपाई)

भारतवर्ष गौरवस्तु तीर्थ स्थान
"शैलधाम धाम"

शैलधाम धाम

वीरसेन आचार्य महान आर्यनन्दि गुरु थे गुण-खान।
धवल बुद्धिधारी सुविशाल अठ सौ सोलह सन शुभ काल ॥
अक्टूबर महिना दिन आठ धवला टीका रची सुपाठ ।
श्लोक बहत्तर सहस्र प्रमाण धवला में निर्मल श्रुतज्ञान॥
जयधवला भी रची महान बीस सहस्र श्लोक प्रमाण ।
गुरु चरणों में अर्घ्य चढ़ाय पद-अनर्घ्य दृष्टि में लाय॥
ॐ ह्रीं श्री प्रथम श्रुतस्कन्धटीकाकार-वीरसेनाचार्यदेवाय
अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।





श्री गुणधर आचार्य के लिए अर्घ्य (चौपाई)

भारतवर्ष गौरवस्तु तीर्थ स्थान
"शैलधाम धाम"

शैलधाम शैलधाम शैलधाम शैलधाम

गुणभूषण गुणधर आचार्य परिणति पाप-रहित अविकार ।

श्रुतस्कन्ध प्रथम दातार सर्वप्रथम श्रुत रचनाकार ॥

ग्रन्थ कसायपाहुड़ दातार निष्कषाय परिणति व्यापार ।

पेज्जदोसपाहुड़ भी नाम वीतराग परिणति सुखधाम ॥

दो सौ तेतिस गाथा-बद्ध जयधवला टीका उपलब्ध ।

गुरु-चरणों में अर्घ्य चढ़ाय पद-अनर्घ्य दृष्टि में ल्याय ॥

ॐ ह्रीं श्री प्रथम श्रुतस्कन्धटीकाकार-वीरसेनाचार्यदेवाय

अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

